संत रविदास - समानता के दूत

'यदि कोई अच्छा नहीं कर सकता, तो कम से कम दूसरों को नुकसान मत पहुँचाओ।
यदि कोई फूल की तरह नहीं बन सकता, तो कम से कम कांटे मत बनो।'

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी
संस्थापिका, सहज योग ध्यान

सहज योग परिवार की ओर से संत रविदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

संत रविदास

संत रविदास

संत रविदास भारतीय इतिहास के 'उत्तर मध्यकाल' के दौरान एक महान संत, कवि, दार्शनिक, समाज सुधारक और ईश्वर अनुयायी थे। वह भक्ति आंदोलन की प्रमुख हस्तियों में से एक थे और उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश दिए थे। वह एक समृद्ध आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे और लोग उनकी पूजा भी करते थे, उन्हें सुनते थे और उनके गीत, पद आदि सुनाते थे।

आमतौर पर माना जाता है कि संत रविदास कबीर के युवा समकालीन थे। कुछ स्रोतों के अनुसार रविदास की दीक्षा कबीर के प्रसिद्ध गुरु रामानंद ने दी थी। और कुछ परंपराओं का दावा है कि रविदास जी, महान महिला कवि-संत मीराबाई के गुरु थे। उनके पद, भक्ति गीत और अन्य लेखन (लगभग 41 छंद) का उल्लेख सिख धर्मग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब में किया गया है, जिसे 5वें सिख गुरु, अर्जन देव जी द्वारा संकलित किया गया था। वह सिखों और हिंदुओं दोनों के लिए पूजनीय हैं।

संत रविदास जयंती या जन्मदिन की सालगिरह उनकी शिक्षाओं को कायम रखने और पूरी दुनिया में शांति और भाईचारे की स्थापना के लिए माघ पूर्णिमा को बड़े उत्साह के साथ मनाई जाती है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

संत रविदास का जन्म हरिजन जाति में कलसा देवी जी और बाबा संतोख दास जी के घर 1377 ई. में वाराणसी, यूपी के सीर गोवर्धनपुर गाँव में हुआ था (हालाँकि कुछ लोगों का मानना है कि यह 1440 ई. था)।

बचपन में वे अपने गुरु पं. शारदानंद की पाठशाला में जाते थे। कुछ समय बाद कुछ उच्च जाति के लोगों ने पं. शारदानंद को पाठशाला में रविदास जी को पढ़ाने से प्रतिबंधित कर दिया था। हालाँकि, यह महसूस करते हुए कि रविदास एक धर्मात्मा बालक थे, पं. शारदानंद ने उन्हें पढ़ाने के लिए अपनी पाठशाला में भर्ती कर लिया। वह बहुत मेधावी और होनहार छात्र थे और उन्हें अपने गुरु से जो भी शिक्षा मिलती थी, उससे कहीं अधिक प्राप्त होता था। पं. शारदानंद उनसे और उनके व्यवहार से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने सोचा कि एक दिन रविदास आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध होंगे और एक महान समाज सुधारक बनेंगे।

संत रविदास की आध्यात्मिक शक्ति उस घटना से स्पष्ट होती है जहाँ उनके गुरु पं. शारदानंद उन्हें अपने दोस्त के शव के पास ले आए और रविदास जी ने कहा, 'यह सोने का समय नहीं है मेरे दोस्त, यह उठने और 'लुकाछिपी' का खेल खेलने का समय है।' चूँकि संत रविदास को जन्म से ही आध्यात्मिक शक्तियों का आशीर्वाद प्राप्त था, इसलिए उनके वचन सुनकर उनके मित्र जीवित हो गये। उनके दोस्त के माता-पिता और पड़ोसी यह सब देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए।

विवाह और सामाजिक भागीदारी

जूते बनाने के अपने पेशेवर पारिवारिक व्यवसाय से उनका ध्यान हटने का मुख्य कारण उनका ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति थी और इसके कारण उनके माता-पिता उनके बारे में चिंतित थे। हालाँकि कम उम्र में ही उनका विवाह लोना देवी जी से हो गया और उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका नाम विजयदास रखा गया। अपनी शादी के बाद भी, सांसारिक मामलों में अधिक रुचि होने के कारण वह अपने पारिवारिक व्यवसाय पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित नहीं कर पाए।

वह वास्तविक धर्म को बचाने के लिए ईश्वर के सच्चे दूत थे, जब सामाजिक मान्यताओं, जाति, रंग और पंथ पर भेदभाव के कारण सामाजिक और धार्मिक स्वरूप परेशान कर रहे थे। उनके समय में, निम्न जाति के लोगों की उपेक्षा की जाती थी और उन्हें उच्च जाति के लोगों के समाज में कुछ सामान्य काम करने की अनुमति नहीं थी, जैसेः प्रार्थना के लिए मंदिरों में जाना, पढ़ाई के लिए स्कूलों में जाना, दिन के समय गाँव जाना, गाँव में उचित घर के बजाय झोपड़ियों में रहना और भी बहुत कुछ। सामाजिक असमानता का ऐसा परिदृश्य देखने के बाद संत रविदास जी ने निम्न जाति के लोगों की बुरी स्थिति से स्थायी रूप से निपटने के लिए सभी को आध्यात्मिक संदेश देना शुरु किया। उन्होंने बहादुरी से सभी भेदभावों का सामना किया और लोगों को सिखाया कि किसी को उसकी जाति, धर्म या भगवान में विश्वास से नहीं जाना जाता है, वह केवल अपने महान कार्यों (कर्म) के लिए जाना जाता है।

बाद का जीवनअपने जीवन में बाद में, वह भगवान राम के एक महान अनुयायी बन गए और भगवान के प्रति अपनी भावना व्यक्त करने के लिए राम, रघुनाथ, राजा राम चंदर, कृष्ण, हरि, गोबिंद आदि जैसे कुछ नामों का पालन करना शुरु कर दिया।

बाद का जीवन

अपने जीवन में बाद में, वह भगवान राम के एक महान अनुयायी बन गए और भगवान के प्रति अपनी भावना व्यक्त करने के लिए राम, रघुनाथ, राजा राम चंदर, कृष्ण, हरि, गोबिंद आदि जैसे कुछ नामों का पालन करना शुरु कर दिया।

संत रविदास की शिक्षाएँ

आजकल समाज अलग-अलग जातियों में बंटा होने के बावजूद भी लोग अपने-अपने आदर्श देवताओं और महापुरुषों । को साझा कर रहे हैं। लेकिन हम सभी जानते हैं कि महापुरुष सबके होते हैं और उन्होंने अपना जीवन समाज, देश और पूरे विश्व के हित के लिए समर्पित कर दिया है। महापुरुषों का दर्जा भगवान के बराबर होता है। आज समाज में यह संदेश जाना चाहिए कि संत रविदास और उनके जैसे महापुरुष सिर्फ एक जाति या समुदाय के नहीं हैं। अगर किसी को केवल जाति तक सीमित कर दिया जाए तो यह उन महापुरुषों का अपमान है। यदि हम संत रविदास महाराज के जीवन पर प्रकाश डालें तो हम यहां देखेंगे कि वे केवल एक जाति या समाज के संत नहीं थे, बल्कि उन्होंने सभी के लिए ईश्वर की इच्छा पूरी की। गुरु नानक देव ने भी संत रविदास को अपना गुरु माना और उनकी महानता को स्वीकार किया। उनके जीवन और कार्यों के प्रति गहरी निष्ठा देखकर हमें यह समझ आता है कि जाति, धर्म ओर क्षेत्र की सीमाओं को तोड़कर मानवता की मिसाल कायम की जा सकती है।

ईश्वर में अटूट आस्था रखते हुए भी संत रविदास जीवन भर समाज में भाईचारे और समानता का संदेश फैलाते रहे। समाज में सभी को एक-दूसरे के साथ समान व्यवहार करना सिखाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। संत रविदास ने कई ऐसी रचनाएँ लिखीं जिनमें आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों संदेश दिए गए।

कर्म बंधन में बंध रहियो, फल की ना तजियो आस
कर्म मानुष का धर्म है, सत भाखे रविदास

अर्थः हमें सदैव अपने काम में लगे रहना चाहिए और अपने काम का फल मिलने की आशा कभी नहीं छोड़नी चाहिए। यदि कर्म करना हमारा धर्म है तो फल पाना हमारा सौभाग्य है।

रविदास जन्म के करने, होत न कोउ निंदा
नकर कूं निंदा करि हरि है, ओछे करम की कीच

अर्थः रविदास जी जीवन भर लोगों को यही समझाते रहे कि कोई भी व्यक्ति किसी भी जाति के कारण नीचा नहीं होता। व्यक्ति के किये गये कर्म ही उसे हीन बनाते हैं।

मन चंगा तो कठौती में गंगा

एक बार उनके कुछ शिष्यों ने उनसे पवित्र नदी गंगा में पवित्र स्नान करने के लिए बार-बार आग्रह किया, लेकिन चूंकि वह किसी काम में व्यस्त थे, इसलिए उन्होंने एक आम कहावत के बारे में उनकी मान्यताओं का जवाब दिया 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' जिस का अर्थ है हमारा शरीर केवल पवित्र नदी में स्नान करने से नहीं, आत्मा से पवित्र होना चाहिए, यदि हमारी आत्मा और हृदय शुद्ध और प्रसन्न हैं तो हम घर में पानी से भरे टब में स्नान करने के बाद भी पूरी तरह पवित्र हो जाते हैं।

संत रविदास के संदेश को कैसे आत्मसात करें

आज के मायारूपी युग में संत रविदास द्वारा दिखाए गए मानव सदभावना के मार्ग को कौन समझेगा। लेकिन आज, जहां जीवन अंधकार के माहोल से घिरा हुआ है, वहां प्रकाश की एक किरण भी है जिस से मनुष्य को न केवल एक में सटीक विकल्प दिया है, बल्कि उसके आज के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के सामने आने वाले प्रश्नों को हल न करने की गुंजाइश भी दी है। अर्थात आत्म-साक्षात्कार का अनुभव करना, अर्थात सर्वप्रथम हमें अपने 'स्व' को जानना होगा तभी हम ईश्वर को जान सकते हैं। यह केवल 'कुंडलिनी नामक सहज ऊर्जा के जागरण के माध्यम से संभव है, जो हमारी टीढ़ के आधार से उठती है और चक्रों नामक विभिन्न ऊर्जा केंद्रों को जोड़ती हुयी, हमारी आत्मा को प्रबुद्ध कर के और हमारे सिर के शीर्ष पर फॉन्टानेल हड्डी को खोलते हुए व्यापक शक्ति या 'ब्रहमशक्ति' को हमारे सूक्ष्म तंत्र में प्रवेश करने के लिए रास्ता बनती है और ठंडी हवा के रूप में प्रवाहित होती है जिसे चेतन्य या वाइब्रेशन्स' कहा जाता है जो हमारे अस्तित्व में योग की स्थिति को प्रकट करती है। योग का अर्थ है आत्मा का परमात्मा से मिलन। इस प्रकार, साधक निहित आत्मा की पवित्रता की स्थिति प्राप्त कर, जैसा संत रविदास जी के लेखन में विदित है, सर्व धर्म समभाव' (सभी धर्मों के प्रति सम्मान) और 'सर्व मानव समभाव (मानवता के प्रति सम्मान) के साथ सच्ची आध्यात्मिकता के मार्ग पर निर्धारित हो जाता है।

आत्म-साक्षात्कार या योग के अनुभव को परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने आसान बना दिया जब उन्होंने 5 मई 1970 को 'कुंडलिनी को जागृत कर के सहस्त्रार नाम से जाना जाने वाला सातवां चक्र खोला और इसे विश्व के आध्यात्मिक इतिहास में पहली बार सामूहिक स्तर पर आत्म-साक्षात्कार प्राप्ति को संभव बनाया। इस प्रकार, सहज योग का जन्म हुआ और वर्तमान में दुनिया के 140 से अधिक देशों में इसका अभ्यास किया जाता है और अभ्यास करने वाले आनंदमय जीवन जी रहे हैं। 'सहज' का अर्थ है आपके साथ पैदा हुआ और योग' का अर्थ है सर्वव्यापी शक्ति के साथ 'आत्मा का मिलन। महज योग हमें जड़ों का जान प्रदान करता है जो जीवन के मिशन और उदेश्य को उजागर करता है।

सहज योग पर अधिक जानकारी के लिए कृपया दी गई वेबसाइटों को ब्राउज़ करें।

THE LIFE ETERNAL TRUST -NIRMAL DHAM-CHHAWALA - DELHI

सहज दर्शन प्रचार और प्रसार समिति

सहजयोग ध्यान सदैव निःशुल्क है।

+91 98712 78936

www.nirmaldham.org | www.sahajayoga.org.in

FREE